वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 348
ISBN 978-93-82071-18-1

सम्मेदशिखर विधान

–रचयित्री –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

द्वितीय संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, 23 अप्रैल 2013	16/-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 2012—7000 प्रतियाँ प्रकाशित

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जैन शासन में अयोध्या एवं सम्मेदशिखर ये दो तीर्थ अनादिनिधन एवं शाश्वत माने गये हैं। अयोध्या में सभी तीर्थंकरों का जन्म होता है और सम्मेदशिखर से सभी तीर्थंकर निर्वाण प्राप्त करते हैं किन्तु हुण्डावसर्पिणी के कालदोष से इस शाश्वत नियम में व्यतिक्रम हो गया अतः अयोध्या में केवल पाँच तीर्थंकरों का जन्म हुआ और सम्मेदशिखर से चौबीस में से बीस तीर्थंकरों ने ही निर्वाण प्राप्त किया किन्तु इनके अतिरिक्त भी असंख्य मुनियों ने यहीं पर तपश्चरण करके मुक्ति प्राप्त की है।

शाश्वत सिद्धक्षेत्र होने से सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रों में यह प्रमुख तीर्थक्षेत्र है इसलिए इसे तीर्थराज भी कहा जाता है। तिलोयपण्णत्ति, प्राकृत निर्वाण भक्ति, उत्तरपुराण आदि में इस तीर्थ की महिमा का विस्तृत वर्णन है। इस शाश्वत तीर्थ के बारे में कहा गया है कि–''एक बार वन्दे जो कोई, ताहि नरक-पशुगति नहिं होई।।''

शास्त्रों में तो शिखर जी की वंदना करने का फल बताया है कि वह व्यक्ति फिर संसार में अधिक से अधिक 49 भव धारण करने के बाद मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इस तीर्थ पर पर्वत की चढ़ाई अत्यन्त कठिन है फिर भी प्रत्येक जैनी इस तीर्थ की वंदना के लिए एक बार अवश्य जाने का प्रयत्न करता है। इस तीर्थराज की भक्ति करने के लिए इस युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, राष्ट्रगौरव परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ''सम्मेदशिखर विधान'' की रचना कर भक्तों को एक ऐसा माध्यम प्रदान किया है, जिसके द्वारा जिनेन्द्र आराधना में तन्मय होकर भव्यजीव परोक्ष में भी तीर्थ की अर्चना कर अपने असंख्य कर्मों की निर्जरा कर महान पुण्य का संचय कर लेते हैं और पुनः-पुनः भाई गई भावना साकाररूप ले लेती है जिससे उन्हें एक न एक दिन तीर्थ के भी दर्शन प्राप्त हो जाते हैं।

इस विधान में 27 अर्घ्य और 2 पूर्णार्घ्य हैं। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी इस युग में साक्षात् सरस्वती का अवतार हैं, जिनकी लेखनी से लिखित अनेक उच्चकोटि के ग्रंथ, टीकाएँ, विधान, औपन्यासिक शैली में लिखी गईंमहापुरुषों की रोमांचक जीवनी आदि आज के पाश्चात्य युग में धर्म के मार्ग से विमुखहोने वाले जीवों को नई दिशा प्रदान कर उन्हें कल्याण के मार्ग में लगाने में समर्थ हैं, उसी शृँखला में पूज्यनीय माताजी के द्वारा लिखित महान पुण्यफल का प्रदाता यह विधान है, मैं प्रत्येक भव्य प्राणी के मनोरथों की सिद्धि के साथ-साथ उनकी आत्मा को भीनिर्वाण प्राप्ति के योग्य बनाने में सफलीभूत कृति सिद्ध होवे, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

अनंतानंत तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाणस्थली अनादिनिधन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी की विशेष भक्ति-वंदना के लिए इस ''सम्मेदशिखर विधान'' पुस्तक का प्रकाशन ''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर' के द्वारा किया जा रहा है। इसके माध्यम से अनेकानेक भव्यजीव शाश्वत सिद्धक्षेत्र की भक्ति का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक में जहाँ विधान के द्वारा सम्मेदशिखर पर्वत के ऊपर निर्मित 25 टोंकों का स्मरण किया गया है, वहीं इस पर्वत से युग के अन्तिम मोक्षगामी तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की सुन्दर पूजन भी है तथा सम्मेदशिखर वंदना, चालीसा, भजन, आरती आदि के द्वारा सिद्धक्षेत्र की पूर्ण भक्ति करने का अवसर प्रदान किया गया है।

इस विधान की रचना दो बार विश्वविद्यालय की सर्वोच्च पदवी ''डी. लिट्.'' की मानद उपाधि से अलंकृत पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा की गई है तथा प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा ''शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर महिमा'' नामक सारगर्भित शोध आलेख एवं अनेक पद्यात्मक रचनाएँ इसमें विशेष पठनीय हैं।

यह विधान की पुस्तक सभी भव्यात्माओं के लिए जिनेन्द्र भक्ति एवं तीर्थ भक्ति का माध्यम बने, यही मंगल भावनाएँ हैं और पूज्य माताजी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहकर हम सभी के लिए इसी प्रकार से देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का स्रोत प्रवाहित करती रहें, यही अनन्तानन्त सिद्ध भगवन्तों के चरणों में प्रार्थना है।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है– वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

60 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितनेही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद् उपाधि प्रदान की। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की ज्ञानशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल की का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं तथा आज भी हो रहे हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 "शांतिवर्ष" के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर "हीरक जयंती महोत्सव वर्ष" के रूपमें मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माप किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण–जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा–हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?–भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर महिमा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर दिगम्बर जैनों का अनादिनिधन शाश्वत सिद्धक्षेत्र है। जहाँ से अनन्त तीर्थंकरों ने मोक्षप्राप्त किया है और अनन्तानन्त भव्य जीवों ने भी तपस्या करके इस पर्वतराज से निर्वाणधाम को प्राप्त किया है इसीलिए इसे सिद्धक्षेत्र के रूप में सदा से पूजने की परम्परा रही है। जैन समाज में जन्म लेने वाले प्रत्येक नर-नारी को अपने भव्यत्व की पहचान के लिए सम्मेदशिखर की यात्रा/वंदना करने की प्रेरणा विरासत में पूर्वजों के द्वारा प्राप्त होती है और उन्हें प्रारंभ से ही यह पंक्ति सिखाई जाती है–

एक बार वन्दे जो कोई, ताहिं नरक पशु गति नहिं होई।

अर्थात् सम्मेदशिखर पर्वत की एक बार भी वंदना करने वाले मनुष्य को नरक और पशु गति की प्राप्ति नहीं होती है।

श्री देवदत्त यतिवर द्वारा रचित ''श्री सम्मेदशिखर माहात्म्य'' नामक ग्रंथ में इस अनादि तीर्थ का बड़ा भारी महत्व वर्णित है।

उसमें उन्होंने प्राथमिकरूप में लिखा है कि–

सम्मेदशैलवृत्तान्तो महावीरेण भाषितः।
गौतमं प्रति भूयः स लोहाचार्येण धीमता।।6।।
तत्सद्वाक्यानुसारेण देवदत्ताख्यसत्कविः।
सम्मेदशैल माहात्म्यं प्रकटीकुरुतेऽधुना।।7।।

अर्थ–तीर्थंकर महावीर ने गौतमगणधर के सम्मुख सम्मेदशिखर का वृत्तान्त कहा था। उसे ही फिर से बुद्धि सम्पन्न अष्टम, नवम और दशम अंगधारी आचार्यों में एक आचार्य लोहाचार्य ने कहा। जिनके सद्वाक्यों के अनुसार अपनी बुद्धि व्यवस्थित कर देवदत्त नाम का यह सत्कवि सम्मेदशैल अर्थात् सम्मेदशिखर की महिमा को इस काव्य में प्रगट कर रहा है।।6-7।।

तत्रोत्तमे शैलवरे कूटानां विंशतिर्वरा।
तत्रस्थान्सर्वदा वन्दे तत्प्रमाणाञ्जिनेश्वरान्।।8।।

अर्थात् सिद्ध क्षेत्रों में सर्वोत्तम श्रेष्ठ पर्वत सम्मेदशिखर पर श्रेयस्कर बीस कूट हैं उन बीसों कूटों पर बीस तीर्थंकर के चरण चिन्ह हैं। मैं उन तीर्थंकरों को सर्वदा नमस्कार करता हूँ।।8।।

वर्तमान युग में जम्बूद्वीपस्थ भरतक्षेत्र के चौबीस तीर्थंकरों में से बीस तीर्थंकरों ने इस पर्वत के भिन्न-भिन्न कूटों से मोक्ष प्राप्त किया है, उन कूटों के प्रति भी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कवि ने कहा है–

विंशकूटा इमे नित्यं ध्येयाः सम्मेदभूभृतः।
स्वस्वस्वामिसमायुक्ता ध्यानात्सर्वार्थसिद्धिदाः।।18।।

अर्थ–बीसों ही तीर्थंकरों के अपने-अपने नाम से समलङ्कृत और ध्यान करने पर सर्वार्थों अर्थात् सभी प्रयोजनभूत पदार्थों की सिद्धि करने वाले ये बीसों ही कूट निरन्तर, हमेशा ध्यान करने योग्य हैं।।18।।

इस सिद्धक्षेत्र की यात्रा प्राचीनकाल से लोग बड़ी धूमधाम से करते आये हैं। द्वितीय तीर्थंकर भगवान् अजितनाथ इस सम्मेदशिखर पर्वत से वर्तमान हुण्डावसर्पिणी के प्रथम मोक्षमागी हुए हैं। उनके काल में उत्पन्न हुए सम्राट् सगर चक्रवर्ती ने प्रथम बार यात्रा संघ ले जाकर इस सिद्धक्षेत्र की वंदना की थी पुनः अन्य और महापुरुषों की यात्रा का वर्णन भी आता है–

प्रथमः सगरः प्रोक्तो मघवांश्च ततः परम्।
सनत्कुमार आनन्दः प्रभाश्रेणिक ईरितः।।20।।

अर्थ–सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर यात्रा संघ लाने वाले प्रथम संघपति सगर चक्रवर्ती थे। उनके बाद क्रमशः मघवान्, सनतकुमार चक्रवर्ती, आनन्द, प्रभाश्रेणिक आदि बताये गये हैं।।20।।

संघपति प्रभाश्रेणिक के बाद क्रमशः ललितद्योतक, दत्तश्रेष्ठी, कुन्दप्रभ, दत्तशुभ (चरश्रेणिक), दत्तश्रेणिक, सोमप्रभ, सुप्रभ, चारूश्रेणिक, भावदत्तक या भवदत्त, अविचल, आनंदश्रेणिक, सुन्दर, रामचन्द्र, अमर श्रेणिक आदि सुवरान्त अर्थात् जिनका अंतिम समय सुन्दर व श्रेष्ठ है, ऐसे ये भव्य जीव तीर्थयात्रा संघों के संघपति हुए।

सम्मेदशिखर पर्वत जो सभी पर्वतों में श्रेष्ठ है, उसका विस्तार बारह योजन है। इस पर्वत की प्रत्येक टोंक पर अनन्त मुनिराज मुक्त हुए हैं और इसी पर्वतराज से सिद्धत्व को प्राप्त होकर सिद्ध हुए हैं।

आगे और भी कहा है–

भव्या हि तत्र यात्रार्हा अभव्या नैव संस्मृताः।
भव्या भाविशिवाः प्रोक्ताः क्वचिन्मुक्ता न तत्पराः।।25।।

अर्थ–जो भविष्य में मुक्त होंगे, वे भव्य जीव तथा जो कभी भी मुक्त नहीं

होंगे वे अभव्य जीव कहे गये हैं। सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर यात्रा करने की पात्रता भव्य जीवों की ही मानी गई है, अभव्य जीवों की नहीं।।25।।

केवलज्ञानी स्नातक मुनिराज ऐसा कहते हैं–"भव्यराशि का कोई भी, कैसा भी पापी जीव सम्मेदशिखर पर ठहरता है या बैठता है तो 49 भवों के अन्दर ही वह मुक्त हो जाता है। इस संसार में एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों में, जो नामकर्म की विभिन्नता से अनेकानेक आकृति वाले हैं, वे भव्यराशि के भाग से वहाँ अर्थात् सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर उत्पन्न होते हैं वे निश्चय ही उनचास भवों के भीतर मोक्ष जाने योग्य भव्यजीव हैं। भव्य राशि से अतिरिक्त जीवों का वहाँ जन्म ही नहीं होता है।

इसी प्रकरण में नरकायु के बंधक राजा श्रेणिक के द्वारा सम्मेदशिखर यात्रा का उपक्रम करने के पश्चात् भी उनकी यात्रा न हो पाने का विषय भी पठनीय है, उसे पढ़कर भव्य जीवों को नरकायु-तिर्यंचायु के बंध के कारणों से सदैव बचने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

नये वस्त्र पहनकर शिखर जी की वंदना करने की परम्परा क्यों है ?

प्रायः करके जैन समाज में परम्परा रही है कि सम्मेदशिखर की यात्रा करने वाले बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी नये कपड़े (जो पहले कभी न पहने गये हों) लेकर जाते हैं और वहाँ उन्हें धोकर पहनकर पर्वत पर चढ़ते हैं। इसका कारण तन-मन की पवित्रता के साथ-साथ वस्त्रों की शुद्धि भी आवश्यक समझना चाहिए।

सम्मेदशिखर माहात्म्य में तो यहाँ तक लिखा है कि–

जो मोक्षफल को चाहने वाला है, वह श्वेत वस्त्र पहनकर सम्मेदशिखर की यात्रा करे। जो पुत्र चाहने वाला है वह सुपुत्र की प्राप्ति के लिए पीले वस्त्र धारण करके सम्मेदशिखर की यात्रा करे। यदि रोग से पीड़ित काले वस्त्र धारण कर यात्रा करने वाला होवे तो कुछ ही दिन बाद वह सरोगी निरोगता को प्राप्त करता है तथा यह भी कि जो सम्मेदशिखर की यात्रा करने वाला है वह कहीं पर शोक को प्राप्त नहीं होता है। जो लक्ष्मी चाहने वाला है, वह ताम्रवर्णीय वस्त्र धारण कर पर्वतराज सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा प्रयत्नपूर्वक करे।

इससे यह अभिप्राय निकलता है कि सर्वोत्तम मोक्षफल की इच्छा से श्वेत वस्त्र पहनकर सम्मेदशिखर की वंदना करना सर्वाधिक शुभ है। उसके मध्य मोक्षप्राप्ति से पूर्व सांसारिक वैभव तो स्वयं प्राप्त हो ही जाएंगे।

चतुर्विध संघ को भी सम्मेदशिखर यात्रा कराने की प्राचीन परम्परा है– हम इस युग में तो बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज के संघ को दक्षिण भारत से सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा सेठ पूनमचंद घासीलाल-मुम्बई परिवार द्वारा कराने का पुण्यमयी इतिहास तो सुनते ही हैं कि उन पुण्यात्माओं ने यह पुण्यकार्य करके अपरिमित धन-धान्य को तो प्राप्त किया ही था, पुनः उनमें से दो भाइयों ने जैनेश्वरी दीक्षा भी धारण करके मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया है, जिन्हें मैंने स्वयं अपनी आँखों से (मोतीलाल जौहरी मुनि श्री सुबुद्धिसागर बने और गेंदनमल जौहरी भी दीक्षित हुए) देखा है।

इसी प्रकार पूर्व के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो श्रद्धा से उन चक्रवर्ती सम्राट् के प्रति भी मस्तक नत हो जाता है, जिन्होंने करोड़ों वर्ष पूर्व चतुर्विध संघ को बड़े महोत्सव पूर्वक सम्मेदशिखर की यात्रा करवाई। उस समय का वर्णन भगवान महावीर की दिव्यध्वनि के अनुसार श्री गौतम गणधर स्वामी ने राजा श्रेणिक को बताया, तदनुसार श्री देवदत्त यतिवर ने भी कहा है–

उस सगर चक्रवर्ती नामक श्रेष्ठ राजा ने अत्यधिक आदर सत्कार पूर्वक मुनिराजों, आर्यिकाओं, श्रावकों तथा श्राविकाओं के चतुर्विध संघ को साथी बनाकर अर्थात् उन्हें यात्रा के लिए साथ लेकर पहले दिन वह तीन कोस अर्थात् लगभग 9 किमी. चला।

चक्रवर्ती की उस तीर्थ यात्रा में चौरासी लाख शुभ लक्षणों वाले हाथी, अठारह करोड़ शुभ लक्षण सम्पन्न एवं वायु के वेग समान दौड़ने वाले घोड़े तथा चौरासी लाख पदाति सैनिकों की टुकड़ियाँ कही गईं हैं। चक्रवर्ती के साथ यात्रा करने वाले चक्री के सद्वाक्यों की रक्षा करने वाले विद्याधर भी यात्रा के लिएचले।

उस यात्रा में ध्वजाओं एवं नगाड़ों की संख्या एक-एक करोड़ मानी गई है। मार्ग में बाजों की ध्वनि सभी को प्रसन्न करती हुई चलती थी। उस राजा ने अतिशय भक्ति से सम्मेदशिखर पर्वत को ही पूजकर सिद्धवर नामक कूट पर अजितनाथ तीर्थंकर की स्थापना करके और सारे सम्मेदशिखर की तीन बार प्रदक्षिणा देकर जय-जय के घोषों से गूंजता हुआ महोत्सव कराया और वहाँ देवताओं द्वारा किये गये पाँच आश्चर्य हुए जिनको देखकर वहाँ सभी लोग सचमुच आश्चर्यचकित हो गये।

सम्मेदशिखर यात्रा का फल– जब आप इस पर्वत की वंदना करते हैं तो पुस्तक में पढ़ते हैं कि एक-एक टोंक की वंदना से इतने-इतने करोड़-लाख आदि

उपवासों का फल प्राप्त होता है। इसे कपोलकल्पित या भ्रामक नहीं समझना चाहिए, प्रत्युत् पर्वतराज के कण-कण की पवित्रता का स्पर्श करने से जो परिणामशुद्धि होती है, उसी को उपवासों के प्रमाण में हमारे आचार्यों ने निबद्ध करके सम्मेदशिखर पर्वत वंदना की महिमा बताई है। जैसा कि ग्रंथ में भी लिखा है–

ज्ञानीजन बत्तीस करोड़ सच्चे प्रोषधोपवास का जो फल जानते हैं, वह फल सम्मेदशिखर की यात्रा करने वाला यात्री प्राप्त करे। उसके नरकगति और तिर्यंचगति का नाश होता है इस प्रकार भगवान् महावीर द्वारा कथित जो प्रमाण है, वह तुम सभी के लिए सही हो, ऐसी कवि की कामना है।

पुनश्च कहा है–

ईदृक् श्रीजिनराजधर्मकथनं नानाभ्रमध्वंसनम्।
श्रीसम्मेदगिरिप्रमाणसुफलं श्रीवर्धमानेरितम्।।
लोहाचार्यवरेण भूय उदितं श्रुत्वाखिलाः सज्जनाः।
सम्मेदं प्रति यान्तु भावसहिताः सर्वार्थसिद्धिप्रदम्।।94।।

अर्थात् भगवान् महावीर द्वारा बताया गया, जिनराजों द्वारा बताये धर्म का कथन करने वाला तथा उनके भ्रमों का निवारण करने वाला इस प्रकार जो यह सम्मेदशिखर का प्रामाणिक फल वर्णन मुनिवर्य लोहाचार्य ने पुनः उदित किया है, उसको सभी सज्जनपुरुष भावसहित अर्थात् तीर्थवंदना की सच्ची भावना से परिपूर्ण होकर सर्वार्थसिद्धि प्रदान करने वाले सम्मेदशिखर की ओर जाओ। यहाँ कवि ने सम्मेदाचल की यात्रा हेतु हम सभी सज्जनों को उत्साहित किया है तथा अपने इस वर्णन को 'लोहाचार्य द्वारा उदित हुआ था'–ऐसा कहकर प्रामाणिक बनाया है।

इस पर्वत की वंदना केवल भव्यजीव ही करने के अधिकारी होते हैं, अभव्य नहीं।

वर्धमानोक्तितः पश्चाल्लोहाचार्येरितं च यत्।
तद्भव्येषु प्रमाणं हि अभव्या नाधिकारिणः।।77।।

अर्थ– भगवान् महावीर के उपदेश के उपरान्त कुछ समय पीछे लोहाचार्य द्वारा कहा गया या प्रेरित किया गया, जो सम्मेदशिखर का माहात्म्य है, वह भव्यजनों में प्रमाण ही है तथा अभव्य लोग उसमें अधिकारी नहीं होते हैं।

सम्मेदशिखर पर्वत पर जहाँ इस युग के द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथ ने सर्वप्रथम योगनिरोध करके मोक्ष प्राप्त किया, वहीं तेईसवें तीर्थंकर भगवान

पार्श्वनाथ के मोक्षगमन के पश्चात् उस पर्वत से किसी तीर्थंकर ने मोक्ष प्राप्त नहीं किया अर्थात् पार्श्वनाथ भगवान सम्मेदशिखर से मोक्ष जाने वाले तीर्थंकरों में अंतिम तीर्थंकर हैं। उनके मोक्ष जाने के बाद भावसेन नाम के राजा ने उस पर्वत की वंदना करके श्रीप्रसन्नमुख मुनिराज की प्रेरणा से पार्श्वनाथ के स्वर्णभद्रकूट पर जिनमंदिर बनवाकर उसमें भगवान पार्श्वनाथ की नीलमणि वाली रत्नप्रतिमा विराजमान की थी, ऐसा वर्णन भी ग्रंथ में आया है।

तीर्थयात्रा करने से संसार यात्रा समाप्त होती है !—प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के अपने-अपने तीर्थ होते हैं, जो उनकी श्रद्धा से जुड़े होते हैं। वे सभी अपने तीर्थों की यात्रा बड़ी भक्ति से करने जाते हैं और आत्मशांति प्राप्त करते हैं। तीर्थस्थान पवित्रता, शांति और कल्याण के धाम माने जाते हैं। जैनधर्म में भी प्राचीनकाल से तीर्थ का विशेष महत्त्व रहा है। जैनधर्म के अनुयायी प्रतिवर्ष बड़ी श्रद्धापूर्वक अपने तीर्थों की यात्रा करते हैं, उनका विश्वास है कि तीर्थयात्रा से पुण्य संचय होता है और परम्परा से मुक्तिलाभ की प्राप्ति होती है। इसी विश्वास के कारण बालक, वृद्ध, युवा सभी तीर्थभक्त लोग सम्मेदशिखर जैसे दुरूह पर्वतों की वंदना अपने पैरों से करने की भावना करते हैं।

तीर्थक्षेत्रों का माहात्म्य आचार्यों ने लिखा है—

श्री तीर्थपान्थरजसा विरजी भवन्ति, तीर्थेषु विभ्रमणतो न भवेभ्रमन्ति।
तीर्थव्ययादिह नराः स्थिरसंपदः स्यु, भव्या भवन्ति जगदीशमथाश्रयन्तः।।

अर्थात् तीर्थभूमि के मार्ग की रज इतनी पवित्र होती है कि उसके आश्रय से मनुष्य रज रहित अर्थात् कर्ममल रहित हो जाता है। तीर्थों पर भ्रमण करने से अर्थात् यात्रा करने से संसार का भ्रमण छूट जाता है।

निर्वाणक्षेत्र—ये वे क्षेत्र कहलाते हैं जहाँ तीर्थंकरों या किन्हीं दिगम्बर तपस्वी मुनिराज का निर्वाण हुआ हो। शास्त्रों का उपदेश, व्रत, चारित्र, तप आदि सभी कुछ निर्वाण प्राप्ति के लिए है। यही परम पुरुषार्थ है। जिस स्थान पर निर्वाण होता है, उस स्थान पर इन्द्रदेव पूजा को आते हैं तथा चरण-चिन्ह स्थापित कर देते हैं।

तीर्थंकरों के निर्वाणक्षेत्र कुल पाँच हैं—कैलाशपर्वत, चम्पापुरी, पावापुरी, ऊर्जयन्त और सम्मेदशिखर। कैलाश पर्वत से भगवान ऋषभदेव, चम्पापुरी से श्री वासुपूज्य स्वामी, गिरनार से नेमिनाथ स्वामी, पावापुरी से महावीर स्वामी ने कर्मों को नाश कर शाश्वत सुख को प्राप्त किया। सम्मेदशिखर से 20 तीर्थंकरों

ने कठोर आत्म-साधना कर कर्मों को नाश कर अविनाशी सुख को प्राप्त किया।

निश्चितरूप से सम्मेदशिखर गौरवमय भूमि है। इस भूमि की विशेषता है, व्यक्ति जैसे ही शिखर की प्रथम सीढ़ी पर एक कदम रखता है, आगे ही बढ़ता चला जाता है। हृदय आनन्द से इस तरह सराबोर हो जाता है कि आगे आने वाली थकावट उसे महसूस नहीं होती है।

हमारा हृदय तब कितना प्रसन्न होता है, जब हम सम्मेदशिखर पर्वत के पावन शिखरों पर पहुँचते हैं। आँधी-तूफान, झंझावात, वर्षा, तेज हवाएँ सबकुछ चलती हैं, कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि पूरा शिखर ही हिल रहा है, तब भी निर्वाण की वे ज्योतियाँ अकम्प दिखाई देती हैं।

इस पवित्र तीर्थधाम की यात्रा करना हमारा अहोभाग्य है। यही तो वह पर्वत है, जिसके कण-कण में सिद्धत्व की आभा है। असंख्य वर्षों से मानव ही नहीं वरन् देवों ने भी इसकी पूजन-अर्चन कर जीवन को पवित्र किया है। यहाँ का कंकर-कंकर सिद्ध आत्मा के चरण कमलों के स्पर्श से पवित्र है। यात्रा के समय हृदय में जो हर्षोल्लास, प्रफुल्लता और सहज आनन्द की उपलब्धि होती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस पावन तीर्थ की यात्रा, वंदना, दर्शन, संकटहारी, पुण्यकारी और पापनाशिनी है।

भारत का अतीत गौरवमय रहा है। विश्व के अनन्त प्राणी जब अज्ञान के अंधेरे में रास्ते टोह रहे थे, तब इस देश के अनेकों महापुरुष, तीर्थंकर, आचार्य एवं मुनि गहन चिन्तन की अतुल गहराइयों में पहुँचकर सिद्धत्व को प्राप्त कर रहे थे, इसीलिए सम्मेदशिखर जैनों का सबसे पवित्र, बड़ा एवं सबसे ऊँचा तीर्थ माना जाता है।

वर्तमान में सम्मेदशिखर पर्वत की ऊँचाई 4579 फुट है। इसका क्षेत्रफल (विस्तार) 25 वर्ग मी. में है। साधारण दिगम्बर जैन यात्रीगण रात्रि को 1-2 बजे स्नान कर शुद्ध धुले वस्त्र पहनकर गिरिराज की वंदना को जाते हैं।

दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी से 2 फर्लांग की दूरी पर क्षेत्रपाल महाराज की गुमटी है। यहाँ से ढाई मील की दूरी पर गन्धर्व नाला आता है। जहाँ यात्रीगण विश्राम तथा यात्रा से वापसी में जलपान किया करते हैं। यहाँ से 1 मी. की दूरी पर सीता नाला बहता है। सीता नाला पर यात्री बंधुओं के लिए शुद्ध जल से पूजन-सामग्री धोने का जल बहता रहता है। इस नाले के पार से 1 मील दूर चोपड़ा कुण्ड है, जहाँ दिगम्बर जैन मंदिर, वहाँ भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान

चन्द्रप्रभ तथा बाहुबली स्वामी की मूर्ति स्थापित है। यहाँ से आधा किलोमीटर की दूरी पर देवाधिदेव कुन्थुनाथ स्वामी तथा गौतम गणधर महाराज की टोंक शुरू होती है। इस पर्वत की वंदना करते समय यात्री जूते, चप्पल, ऊनी वस्त्र, चमड़े की बनी वस्तुओं का उपयोग न करें, क्योंकि यह पाप बंध का कारण है।

मधुबन से भगवान् कुंथुनाथ जी की टोंक तक 6 मील (9 किमी.) तथा ऊपर समस्त टोकों की वन्दना का घुमाव 6 मील तथा पार्श्वनाथ से नीचे धर्मशाला तथा आने में 6 मील इस प्रकार 18 मील यानि 27 किमी. की यात्रा पुण्यभूमि के प्रताप से किसी प्रकार की थकावट प्रतीत नहीं होती है। इस गिरिराज से असंख्यात चौबीसी और अनन्तानन्त मुनीश्वरों ने कर्म नाश कर मोक्ष पद प्राप्त किया है।

तीर्थराज सम्मेदशिखर के 20 टोंकों से 20 तीर्थंकरों के साथ 86 अरब 488 कोड़ाकोड़ी 140 कोड़ी 1027 करोड़ 38 लाख 70 हजार तीन सौ तेईस मुनि कर्मों को नाश कर मोक्ष पधारे। इस कारण इस भूमि का कण-कण पूजनीय एवं वंदनीय है।

सभी पापों का संहार करने वाले तीर्थराज की वंदना महान् पुण्य का कारण है। एक बार इस तीर्थ की वंदना करने से 33 कोटि 234 करोड़ 74 लाख उपवास का फल मिलता है।

गिरिराज का प्रभाव है कि विशाल जंगल में नाना प्रकार के क्रूर जीव हैं किन्तु आज तक किसी भी तीर्थयात्री को किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं पहुँचाई। यही तो इसका प्रभाव है।

आचार्यों ने आगम ग्रंथों में लिखा है कि इस 12 योजन (96 मील) प्रमाण विस्तार वाले सिद्धक्षेत्र में भव्य राशि कैसी भी हो, अत्यन्त पापी जीव भी इसमें रहता हो/जन्म लेता हो, तो भी 49 जन्मों के बीच में कर्म नाश कर बंधन मुक्त हो जाता है।

इसीलिए संसार में सम्मेदशिखर तीर्थ की वंदना का अचिन्त्य फल माना गया है। वर्तमान में सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर अनेक दिगम्बर जैन संस्थाओं के द्वारा विविध जिनमंदिर, आश्रम, धर्मशाला आदि का संचालन हो रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा भी समय-समय पर क्षतिग्रस्त टोंकों एवं चरणचिन्हों का जीर्णोद्धार किया जाता है। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी सदैव कहा करती हैं कि मेरे गुरुदेव

पूज्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज कहते थे–

जिसने जीवन में सम्मेदशिखर की वंदना नहीं की, आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के दर्शन नहीं किये उसका जीवन अधूरा है। अर्थात् तीर्थों में तीर्थ शिखर जी एवं गुरुओं में गुरु श्री शांतिसागर जी का दर्शन प्रत्येक भव्यात्मा के लिए कल्याणकारी माना गया है।

ऐसे उस पावन तीर्थ सम्मेदशिखर जी एवं वहाँ से मुक्ति को प्राप्त हुए अनन्तानन्त सिद्ध भगवन्तों को मेरा अनन्तानन्तबार वंदन है और अन्त में यही भावना है–

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।21।।

मण्डल का नक्शा

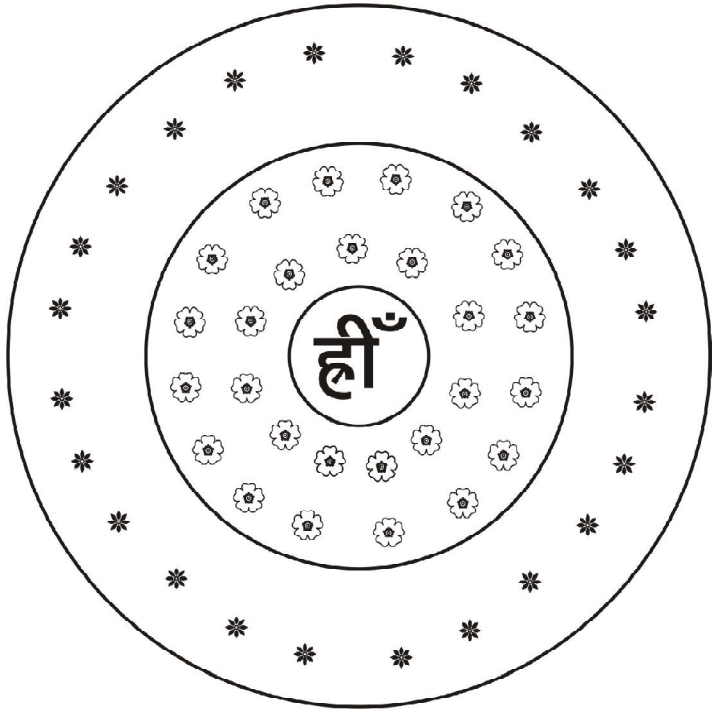

सम्मेदशिखर विधान

मंगलाचरण

सिद्धान् सर्वान् नमस्कृत्य, सिद्धस्थानं जिनेशिनाम्।
पूज्यं सम्मेदशैलेन्द्रं, भक्त्या संस्तौमि सिद्धये।।1।।
विंशतितीर्थकर्तारः, कूटेषु विंशतौ शिवम्।
असंख्ययोगिनश्चापि, जग्मुः सर्वान्नमाम्यहम्।।2।।

सिद्धों को कर नमस्कार, सम्मेदगिरीन्द्र स्तवन करूँ।
सिद्धभूमि के वंदन से कटु, कर्मकाष्ठ को दहन करूँ।।
बीस कूट पर बीस जिनेश्वर, और असंख्य महामुनिगण।
उनको वंदूँ भक्ती से जो, सिद्धवधू को किया वरण।।

।।इति श्री जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–अथ स्थापना- शंभु छन्द –

गिरिवर सम्मेदशिखर पावन, श्रीसिद्धक्षेत्र मुनिगण वंदित।
सब तीर्थंकर इस ही गिरि से, होते हैं मुक्तिवधू अधिपति।।
मुनिगण असंख्य इस पर्वत से, निर्वाण धाम को प्राप्त हुए।
आगे भी तीर्थंकर मुनिगण का, शिवथल यह मुनिनाथ कहें।।1।।

–दोहा –

सिद्धिवधू प्रिय तीर्थकर, मुनिगण तीरथराज।
आह्वानन कर मैं जजूँ, मिले सिद्धिसाम्राज्य।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

चाल-नन्दीश्वर पूजा

भव-भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
नहिं मिटी तृषा की पीर, आखिर ऊब गया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।1।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में त्रयविध ताप, अतिशय दाह करे।
चंदन से पूजत आप, अतिशय शांति भरे।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।2।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सर्वसुखहेतु, सबकी शरण लिया।
अब अक्षय सुख के हेतु, तुम पद पुंज किया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।3।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु वर्ण वर्ण के फूल, चरण चढ़ाऊँ मैं।
मिल जाये भवदधिकूल, समसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।4।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा पकवान, नित्य चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा व्याधि की हान, निजसुख पाऊँ मैं।।

सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।5।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरज्योति उद्योत, आरति करते ही।
हो ज्ञानज्योति उद्योत, भ्रम तम विनशे ही।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।6।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अग्नि में खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
जिनपद पंकज को सेय, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।7।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर बहुफल की आश, बहुत कुदेव जजे।
अब एक मोक्षफल आश, फल से तीर्थ जजें।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।8।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अर्घ रजत के फूल, लेकर नित्य जजूँ।
होवे त्रिभुवन अनुकूल, तीरथराज जजूँ।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।9।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकर-असंख्यमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

झरने का अतिशीत जल, शांतीधार करंत।
त्रिभुवन में हो सुख अमल, सर्वशांति विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब ले, तीर्थराज को नित्य।
पुष्पांजली चढ़ावते, मिले सर्वसुख इत्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक टोंक अर्घ्य

–सोरठा–

तीर्थराज सुर वंद्य, पूजत निज सुख संपदा।
मिले ज्ञान आनंद, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।1।।

(इति मण्डलस्योपरि पंचविंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सम्मेदशिखर टोंक पूजन

सिद्धवर कूट नं. 1

–शंभु छंद–

श्री अजितनाथ जिन कूट सिद्धवर से निर्वाण पधारे हैं।
उन संघ हजार महामुनिगण, हन मृत्यू मोक्ष सिधारे हैं।।
इससे ही एक अरब अस्सी, कोटी अरु चौवन लाख मुनी।
निर्वाण गये सबको पूजूँ, मैं पाऊँ निज चैतन्यमणी।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, अनुक्रम से निजराज्य।।1।।

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट नं. 2

श्री संभव जिनवर धवलकूट से, हजार मुनिसह मोक्ष गये।
इससे नौ कोड़िकोड़ि बाहत्तर, लाख बयालिस हजार ये।।
पुनि पाँच शतक मुनिराज सर्व, निर्वाण धाम को प्राप्त किये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, निजज्ञानज्योति हो प्रगट हिये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
ब्यालिस लाख उपवास फल, अनुक्रम से शिवराज्य।।2।।

ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द कूट नं. 3

अभिनंदन जिन आनंद कूट से, हजार मुनिसह सिद्ध बने।
बाहत्तर कोड़िकोड़ि सत्तर, कोटी मुनि सत्तर लाख भने।।
ब्यालीस सहस अरु सातशतक, मुनि यहाँ से मोक्ष पधारे हैं।
इन सबके चरण कमल वंदूँ, ये सबको भवदधि तारे हैं।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक लाख उपवास फल, मिले स्वात्म सुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं आनन्दकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट नं. 4

श्री सुमतिनाथ अविचल सुकूट से, सहस साधु सह मोक्ष गये।
इक कोड़िकोड़ि चौरासि कोटि, बाहत्तर लाख महामुनि ये।।
इक्यासी सहस सात सौ, इक्यासी मुनि इससे मोक्ष गये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, हो शांति अलौकिक प्रभो !हिये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि बत्तीस लख, मिले सुफल उपवास।।4।।

ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहन कूट नं. 5

श्री पद्मप्रभू मोहन सुकूट से, तीन शतक चौबिस मुनि सह।
निर्वाण पधारे आत्मसुधारस, पीते मुक्तिवल्लभा सह।।
इससे निन्यानवे कोटि सत्यासी, लाख तेतालिस सहस तथा।
मुनि सात शतक सत्ताइस सब, शिव पहुँचे पूजत हरूँ व्यथा।।

–दोहा–

जो वंदें इस टोंक को, स्वर्ग मोक्ष फल लेय।
एक कोटि उपवास फल, तत्क्षण उन्हें मिलेय।।5।।

ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट नं. 6

जिनवर सुपार्श्व सुप्रभासकूट से, पाँच शतक मुनि साथ लिए।
उनचास कोटिकोटि चौरासी, कोटि सुबत्तिस लाख सु ये।।
मुनि सात सहस सात सौ ब्यालिस, कर्मनाश शिवनारि वरी।
मैं सबके चरण कमल पूजूँ, मेरी होवे शुभ पुण्य घड़ी।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, मिले मोक्ष सुख राज्य।।6।।

ॐ ह्रीं प्रभासकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित कूट नं. 7

श्री चंद्रनाथ जिन ललितकूट से, सहस मुनी सह मोक्ष गए।
इससे नव सौ चौरासि अरब, बाहत्तर कोटि अस्सि लख ये।।
चौरासि हजार पाँच सौ पंचानवे, साधुगण सिद्ध हुए।
इनके चरणों में बार-बार, प्रणमूँ शिवसुख की आश लिए।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे लाख उपवास फल, मिले सरें सब काज।।7।।

ॐ ह्रीं ललितकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ कूट नं. 8

श्री पुष्पदंत सुप्रभ सुकूट से, सहस साधु सह सिद्ध हुये।
इससे ही इक कोड़ाकोड़ी, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
पुनि सात सहस चार सौ अस्सी, मुनी मोक्ष को पाए हैं।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, ये गुण अनंत निज पाए हैं।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदें कर जोड़।
एक कोटि उपवास फल, लहें विघ्न घनतोड़।।8।।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित पुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत्वर कूट नं. 9

श्री शीतलजिन विद्युत् सुकूट से, सहस साधु सह मोक्ष गये।
इससे अठरा कोड़ाकोड़ी, ब्यालीस कोटी साधु गये।।
बत्तीस लाख ब्यालिस हजार, नव शतक पाँच मुनि मोक्ष गये।
इनके चरणारविंद पूजूँ, परमानंद सुख की आश लिये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से निज साम्राज्य।।9।।

ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकुल कूट नं. 10

श्रेयांस प्रभू संकुल सुकूट से, एक सहस मुनि के साथे।
निर्वाण पधारे परम सौख्य को, प्राप्त किया भवरिपु घाते।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, छ्यानवे कोटि छ्यानवे लक्ष।
नव सहस पाँच सौ ब्यालिस मुनि, शिव गये जजूँ कर चित्त स्वच्छ।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, मिले पुनः शिवराज।।10।।

ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट नं. 11

श्री विमल जिनेंद्र सुवीर कूट से, छह सौ मुनि सह सिद्ध हुए।
इससे सत्तर कोड़ाकोड़ी अरु, साठ लाख छह सहस हुए।।
पुनि सात शतक ब्यालीस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबके चरण कमल पूजूँ, मेरे सब कारज सिद्ध भये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।11।।

ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू कूट नं. 12

वर कूट स्वयंभू से अनंत जिन, निज अनंत पद प्राप्त किया।
उन साथ सात हज्जार साधु ने, कर्मनाश निज राज्य लिया।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, सत्तर करोड़ मुनि मोक्ष गये।
पुनि सत्तर लख सत्तर हजार, अरु सात शतक मुनि मुक्त भये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
नव करोड़ उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।12।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्त कूट नं. 13

श्री धर्मनाथ जिन सुदत्त कूट से, कर्मनाश कर मोक्ष गये ।
उनके साथ आठ सौ इक मुनि, पूर्ण सौख्य पा मुक्त भये ।।
उससे उनतिस कोड़ाकोड़ी, उन्निस कोटी साधू पूजूँ।
नौ लाख नौ सहस सात शतक, पंचानवे मुक्त गये पूजूँ।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से अनुपम रिद्धि।।13।।

ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद प्रभ कूट नं. 14

श्री शांतिनाथ जिन कुंद कूट से, नव सौ मुनि सह मुक्ति गये।
नव कोटि कोटि नव लाख तथा, नव सहस व नौ सौ निन्यानवे।।
इस ही सुकूट से मोक्ष गये, इन सबके चरण कमल वंदूँ।
प्रभु दीजे परम शांति मुझको, मैं शीघ्र कर्म अरि को खंडूँ।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, मिले ज्ञान सुख नित्य।।14।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट नं. 15

–शंभु छन्द –

श्री कुंथुनाथ जिन कूट ज्ञानधर, से निर्वाण पधारे हैं।
उन साथ में इक हजार साधू, सब कर्मनाश गुण धारे हैं।।
इससे छ्यानवे कोड़ाकोड़ी, छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख।
छ्यानवे सहस सात सौ ब्यालिस, शिव पहुँचे मुनि पूजूँ आज।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे सिर नाय।
एक कोटि उपवास फल, लहे स्वात्मनिधि पाय।।15।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित कुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट नं. 16

श्री अरहनाथ नाटक सुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इस ही से निन्यानवे कोटि, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
नव सौ निन्यानवे सर्व साधु, निर्वाण पधारे पूजूँ मैं।
सम्यक्त्व कली को विकसित कर, संपूर्ण दुःखों से छूटूँ मैं।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे कोटि उपवास फल, पाय लहूँ निजराज।।16।।

ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संबल कूट नं. 17

श्री मल्लिनाथ संबल सुकूट से, मोक्ष गये सब कर्म हने।
मुनि पाँच शतक प्रभु साथ मुक्ति को, प्राप्त किया गुण पाय घने।।
इस ही से छ्यानवे कोटि महामुनि, सर्व अघाती घाता था।
मैं परमानंदामृत हेतू, इन पूजूँ गाऊँ गुण गाथा।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
एक कोटि प्रोषधमयी, फल उपवास जु सार।।17।।

ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट नं. 18

श्री मुनिसुव्रत निर्जरसुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इससे निन्यानवे कोटिकोटि, सत्यानवे कोटि महामुनि ये।।
नौ लख नौ सौ निन्यानवे सब, मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये।
हम इनके चरणों को पूजें, निज समतारस पीयूष पियें।।

–दोहा–

कोटि प्रोषध उपवास फल, टोंक वंदते जान।
क्रम से सब सुख पायके, अंत लहें निर्वाण।।18।।

ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रधर कूट नं. 19

–दोहा–

नमिजिनवर कूट मित्रधर से, इक सहस साधु सहमुक्ति गये।
इससे नव सौ कोड़ाकोड़ी, इक अरब लाख पैंतालिस ये।।
मुनि सात सहस नौ सौ ब्यालिस, सब सिद्ध हुए उनको पूजूँ।
निज आत्म सुधारस पान करूँ, दुःख दारिद संकट से छूटूँ।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक की, करें वंदना भव्य।
एक कोटि उपवास फल, लहें नित्य सुख नव्य।।19।।

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णभद्र कूट नं. 20

श्री पार्श्व सुवर्णभद्र कूट से, छत्तिस मुनि सह मुक्ति गये।
इससे ही ब्यासी कोटि चुरासी, लाख सहस पैंतालिस ये।।
पुनि सात शतक ब्यालीस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबको पूजूँ भक्ती से, इससे मनवांछित पूर्ण भये।।

–दोहा–

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
सोलह कोटि उपवास फल, मिले भवोदधि पार।।20।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव भगवान की टोंक नं. 21

–शेर छंद–

कैलाशगिरि से ऋषभदेव मुक्ति पधारे।
उन साथ मुनि दस हजार मोक्ष सिधारे।।
मैं बार बार प्रभूपाद वंदना करूँ।
निजात्म तत्त्व ज्ञानज्योति से हृदय भरूँ।।21।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित ऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं. 22

चंपापुरी से वासुपूज्य मोक्ष गये हैं।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्त भये हैं।।

इनके पदारविंद को मैं भक्ति से नमूँ।
निज सौख्य अतीन्द्रिय लहूँ संसार सुख वमूँ ।।2।।

ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं. 23

गिरनार से नेमी प्रभू निर्वाण गये हैं।
शंबू प्रद्युम्न आदि मुनी मुक्त भए हैं।।
ये कोटि बाहत्तर व सात सौ मुनी कहे।
इन सबकी वंदना करूँ ये सौख्यप्रद कहे।।23।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान महावीर की टोंक नं. 24

पावापुरी सरोवर से वीरप्रभू जी।
निज आत्म सौख्य पाया निर्वाण गये जी।।
इनके चरणकमल की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण रोग दुःख की मैं खंडना करूँ।।24।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर कूट नं. 25

चौबीस जिनेश्वर के गणीश्वर उन्हें जजूँ।
चौदह शतक उनसठ[1] कहे उन सबको मैं भजूँ।।
ये सर्व ऋद्धिनाथ रिद्धि सिद्धि प्रदाता।
मैं अर्घ चढ़ाके जजूँ ये मुक्ति प्रदाता।।25।।

ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द) –

नंदीश्वर द्वीप बना कृत्रिम, उसमें बावन जिनमंदिर हैं।
इनमें जिनप्रतिमाएँ मनहर, उनकी पूजा सब सुखकर है।।

1. तिलोयपण्णत्ति के आधार से।

मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, संसार भ्रमण का नाश करूँ।
निज आत्म सुधारस पी करके, निज में ही स्वस्थ निवास करूँ।।26।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का शुभ समवसरण, अतिशायी सुंदर शोभ रहा।
श्री गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु, राज रहें मन मोह रहा।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, तीर्थंकर को जिनबिंबों को।
सब रोग शोक दारिद्र हरूँ, पा जाऊँ निज गुणरत्नों को।।27।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितसर्वजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छन्द –

गिरिवर सम्मेदशिखर से ही, अजितादि बीस तीर्थंकर जिन।
निज के अनन्त गुण प्राप्त किये, मैं उन्हें नमूँ पूजूँ निशदिन।।
यह ही अनादि अनिधन चौबीसों, जिनवर की निर्वाणभूमि।
मुनि संख्यातीत मुक्तिथल हैं, पूजत मिलती निर्वाणभूमि।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिक सर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**1. ॐ ह्रीं तीर्थंकरनिर्वाणकल्याणकपवित्रसम्मेदशिखरतीर्थक्षेत्राय नमः।**
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।
(कोई भी एक मंत्र जपें)

जयमाला

–दोहा –

चिन्मूरति चिंतामणि, चिन्मय ज्योतीपुंज।
गाऊँ गुणमणिमालिका, चिन्मय आतमकुंज।।1।।

–शंभु छन्द –

जय जय सम्मेदशिखर पर्वत, जय जय अतिशय महिमाशाली।
जय अनुपम तीर्थराज पर्वत, जय भव्य कमल दीधितमाली।।
जय कूट सिद्धवर धवलकूट, आनंदकूट अविचलसुकूट।
जय मोहनकूट प्रभासकूट, जय ललितकूट जय सुप्रभकूट।।2।।

जय विद्युत संकुलकूट सुवीरकूट स्वयंभूकूट वंद्य।
जय जय सुदत्तकूट शांतिप्रभ, कूट ज्ञानधरकूट वंद्य।।
जय नाटक संबलकूट व निर्जर, कूट मित्रधरकूट वंद्य।
जय पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि, जय सुवरणभद्र सुकूट वंद्य।।3।।
जय अजितनाथ संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंदाप्रभु पुष्पदंत शीतल, श्रेयांस विमल व अनंतनाथ।।
जय धर्म शांति कुंथू अरजिन, जय मल्लिनाथ मुनिसुव्रत जी।
जय नमि जिन पार्श्वनाथ स्वामी, इस गिरि से पाई शिवपदवी।।4।।
कैलाशगिरी से ऋषभदेव, श्री वासुपूज्य चंपापुरि से।
गिरनारगिरी से नेमिनाथ, महावीर प्रभू पावापुरि से।।
निर्वाण पधारे चउ जिनवर, ये तीर्थ सुरासुर वंद्य हुए।
हुंडावसर्पिणी के निमित्त ये, अन्यस्थल से मुक्त हुए।।5।।
जय जय कैलाशगिरी चंपा, पावापुरि ऊर्जयंत पर्वत।
जय जय तीर्थंकर के निर्वाणों, से पवित्र यतिनुत पर्वत।।
जय जय चौबीस जिनेश्वर के, चौदह सौ उनसठ गुरु गणधर।
जय जय जय वृषभसेन आदी, जय जय गौतम स्वामी गुरुवर।।6।।
सम्मेदशिखर पर्वत उत्तम, मुनिवृंद वंदना करते हैं।
सुरपति नरपति खगपति पूजें, भविवृंद अर्चना करते हैं।।
पर्वत पर चढ़कर टोंक-टोंक पर, शीश झुकाकर नमते हैं।
मिथ्यात्व अचल शतखंड करें, सम्यक्त्वरत्न को लभते हैं।।7।।
इस पर्वत की महिमा अचिन्त्य, भव्यों को ही दर्शन मिलते।
जो वंदन करते भक्ती से, कुछ भव में ही शिवसुख लभते।।
बस अधिक उनंचास भव धर, निश्चित ही मुक्ती पाते हैं।
वंदन से नरक पशूगति से, बचते निगोद नहिं जाते हैं।।8।।
दस लाख व्यंतरों का अधिपति, भूतकसुर इस गिरि का रक्षक।
यह यक्षदेव जिनभाक्तिकजन, वत्सल है जिनवृष का रक्षक।।
जो जन अभव्य हैं इस पर्वत का, वंदन नहिं कर सकते हैं।
मुक्तीगामी निजसुख इच्छुक, जन ही दर्शन कर सकते हैं।।9।।

यह कल्पवृक्ष सम वांछितप्रद, चिंतामणि चिंतित फल देता।
पारसमणि भविजन लोहे को, कंचन क्या पारस कर देता।।
यह आत्म सुधारस गंगा है, समरस सुखमय शीतल जलयुत।
यह परमानंद सौख्य सागर, यह गुण अनंतप्रद त्रिभुवन नुत।।10।।
मैं नमूँ नमूँ इस पर्वत को, यह तीर्थराज है त्रिभुवन में।
इसकी भक्ती निर्झरणी में, स्नान करूँ अघ धो लूँ मैं।।
अद्भुत अनंत निज शांती को, पाकर निज में विश्राम करूँ।
निज 'ज्ञानमती' ज्योती पाकर, अज्ञान तिमिर अवसान करूँ।।।11।।

–दोहा–

नमूँ नमूँ सम्मेदगिरि, करूँ मोह अरि विद्ध।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, वरूँ सर्वसुख सिद्धि।।12।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अन्त्य वन्दना

-अनुष्टुप छंद-

सर्वान् सिद्धान् नमस्कुर्वे, स्वसंवेदनसिद्धये।
मनसा वपुषा वाचा, संततं भक्तिभावतः।।1।।
भरतेऽस्मिन्नयं मुक्त्यै, तीर्थेशां शाश्वतो गिरिः।
कालदोषाच्चतुस्तीर्थ-कराः सिद्धाः पृथक् पृथक्।।2।।
एतस्यामवसर्पिण्या-मस्मिन् शैले शिवं ययुः।
यावन्तोऽपि जनास्तेषां, जिनैः संख्या उदीरिताः।।3।।
उत्सर्पिण्यवसर्पिण्योऽनंतातीतासु येऽत्र वै।
तीर्थंकरा मुनींद्राश्चा-नंता मुक्ता नमामि तान्।।4।।
भाविकाले तथानन्तास्तीर्थंकराश्च योगिनः।
अस्मात्सिद्धिं प्रयास्यंति, तान् सर्वान्नौम्यहं मुदा।।5।।

अनाद्यनिधनस्यास्य, माहात्म्यं केन वर्ण्यते।
भव्या एव प्रवंदंते, नाभव्यैर्वंद्यते कदा।।6।।

एकेन्द्रियादयो जीवा, उत्पद्यंतेऽत्र येऽपि ते।
सर्वे भव्या जिनैः प्रोक्तं, कदापि नान्यथा भवेत्।।7।।

अस्य वन्दनयासंख्यो-पवासानां फलं भवेत्।
किमन्यैर्जल्पनैर्यद्धि, निर्वाणसौख्यमश्नुते।।8।।

श्रुतभृतो मुनीन्द्राश्च, सिद्धा अगणितोऽन्यतः।
भूशैलाब्ध्यादिक्षेत्रेभ्यः, सिद्धान् क्षेत्राणि च स्तुवे।।9।।

द्वीपे सार्धद्वये यत्रा-र्हद्गणभृद् यतीश्वराः।
सिद्धाः सिध्यंति सेत्स्यंति, तान् तत्क्षेत्राणि च स्तुवे।।10।।

पंचकल्याणमेदिन्यः, सातिशयस्थलानि च।
वंदे कृताकृतांश्चापि, जिनचैत्यजिनालयान्।।11।।

पंचमहागुरून् वागी-श्वरीं प्राक्सूरियोगिनः।
अन्वायातान् मुनींद्रांश्च, स्तौमि स्वात्मोपलब्धये।।12।।

श्रीवीरसागराचार्यं, महाव्रतप्रदायिनं।
तमनुसूरिसाधूंश्च, वन्दे समाधिसिद्धये।।13।।

क्षेत्रस्य वन्दनास्तोत्रै-र्दग्ध्वा पापानि शुद्धधीः।
सम्यग् ''ज्ञानमति'' ध्यान-संपत्त्या सिद्धिमाप्नुयाम्।।14।।

सब सिद्धों को नमूँ सदा, निज संवेदन सिद्धी हेतू।
मन वच तन से भक्ति भाव से, ये सब भववारिधि सेतू।।1।।

इस भरत क्षेत्र में चौबिस, तीर्थंकर का मुक्त क्षेत्र शाश्वत।
गिरि सम्मेदशिखर ही काल-दोष से ये शिव गये पृथक्।।2।।

इस अवसर्पिणी युग में श्री-सम्मेदशिखर शुभ पर्वत से।
सिद्ध हुए उनकी गणना हो, गयी वीर प्रभू की ध्वनि से।।3।।

अनन्त उत्सर्पिणि-अवसर्पिणि में अनंत तीर्थंकर मुक्त।
इस पर्वत से हुए अनंत मुनि-गण भी उनको नमूँ सतत।।4।।

तथा भविष्यत् में अनन्त, तीर्थंकर अनंत भी मुनिगण।
इस पर्वत से सिद्ध बनेंगे, उन सबको नित प्रति प्रणमन।।5।।

सिद्धशैल इस अनादि-अनिधन, की महिमा नहिं कह सकते।
भव्य जीव ही दर्शन पाते, नहिं अभव्य को मिल सकते।।6।।

यहाँ पर एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीव जितने।
जन्म धारते हैं जिनवर ने, भव्यराशि में कहा उन्हें।।7।।

असंख्य उपवासों का फल, इस पर्वत वंदन से मिलता।
अधिक और क्या जब त्रिभुवन, साम्राज्य सौख्य निश्चित मिलता।।8।।

श्रुतधर मुनिगण अगणित अन्यत-भू-पर्वत नद्यादिक से।
मुक्तधाम को प्राप्त हुए हैं, मुक्ति हेतु वंदूँ रुचि से।।9।।

ढाई द्वीप में जहाँ जहाँ से, तीर्थंकर गणधर मुनिगण।
सिद्ध हुए, होते हैं, होंगे, उन्हें उन क्षेत्रों को भी नमन।।10।।

तथा पंचकल्याणक क्षेत्रों, को अतिशययुत क्षेत्रों को।
नमूँ सदा कृत्रिम अकृत्रिम, जिनचैत्यालय चैत्यों को।।11।।

पंचपरमगुरु श्री श्रुतदेवी, पूर्वाचार्य साधुगण को।
स्वात्मसिद्धि के लिए नमूँ मैं, अन्वायात सभी मुनि को।।12।।

वीरसिंधु आचार्य प्रवर, महाव्रतदायक गुरुवर को।
नमूँ सदा गुरु परंपरागत, सूरि तथा साधूगण को।।13।।

सिद्धक्षेत्र के वंदन संस्तव से, भवभव के पाप हरूँ।
सम्यग् ''ज्ञानमती'' समाधि के, बल से शिवसुख प्राप्त करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्व तीर्थंकरमुनिगण सिद्धपदप्राप्त-सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, सम्मेदगिरि को वंदते।
वे नरक-पशुगति से छुटें, सुरपद धरें आनंदते।।

चक्रीश पद तीर्थेश पद, पाकर अतुल वैभव धरें।
फिर 'ज्ञानमति' रवि किरण से त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

-दोहा-

तीर्थक्षेत्र की वंदना, भव-भव भ्रमण हरंत।
आत्मा तीर्थ समान हो, बने मुक्ति के कंत।।1।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, तेरह श्रावण शुद्ध।
पार्श्वनाथ निर्वाण से, सप्तमितिथी विशुद्ध।।2।।

महातीर्थ सम्मेदगिरि, नमते सदा मुनीश।
यह विधान रचना किया, पूर्ण नमाकर शीश।।3।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शान्तिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य श्री वीरसागराचार्य।।4।।

उनकी शिष्या ज्ञानमति, गणिनी मैं अल्पज्ञ।
फिर भी जिनवर भक्ति से, हो जाते जन विज्ञ।।5।।

आगम के स्वाध्याय से, श्रद्धा बनी विशेष।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति से, मिला ज्ञान का लेश।।6।।

पूर्ण ज्ञान का बीज है, यही अल्प श्रुतज्ञान।
ज्ञानमती कैवल्य हो, जो अनन्त गुणखान।।7।।

जब तक जग में रवि-शशी, जब तक श्री जिन तीर्थ।
भव्य विधान प्रभाव से, करें स्वात्म को तीर्थ।।8।।

श्री सम्मेद गिरीन्द्र यह, शाश्वत तीर्थ प्रसिद्ध।
नमूँ अनन्तों बार मैं, नमूँ अनन्तों सिद्ध।।9।।

।। इति शं भूयात्।।

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना-गीता छंद

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.....

चलो सभी मिल पूजन कर लें, पार्श्वनाथ भगवान की।
अश्वसेन वामानन्दन के पांचों ही कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-2, वन्दे जिनवरम्-2।।टेक.।।

हम सब प्रभु की पूजन हेतू, आह्वानन विधि करते हैं।
स्थापन सन्निधीकरण, करके आतम निधि वरते हैं।।
आओ तिष्ठो प्रभु मुझ मन में, कुछ तो शक्ति प्रदान करो।
निज सम धैर्य-क्षमा गुण देकर, मेरा भी उत्थान करो।।
पारस प्रभु की पूजन से, बनते पारस भगवान भी।
अश्वसेन वामानन्दन के पांचों ही कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-2, वन्दे जिनवरम्-2।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

-अष्टक-

तर्ज-हे माँ तेरी सूरत.....

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
भव भव में प्रभु हमने, कितना जल पी डाला।
पर शांत न हो पाई, मेरे मन की ज्वाला।।
भव भव के ताप मिटाने को, जलधारा करने आए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
मेरे चैतन्य सदन में, क्रोधाग्नी जलती है।
अज्ञान के अंचल में, छिप-छिप वह पलती है।।
हम इसीलिए चन्दन लेकर, भवताप मिटाने आए हैं।।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
मेरा जीवन खंडित है, मद मोह व माया में।
अब करना अखंडित है, प्रभु शीतल छाया में।।
अतएव अखण्डित पुंजों से, अक्षय पद पाने आए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
कितने उद्यानों में जा, पुष्पों की गंध लिया।
कभी घर को सजाया मैंने, कभी निज शृँगार किया।।
अब तेरे पावन चरणों में, हम पुष्प चढ़ाने आए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
हमने कितने भव-भव में, पकवान बहुत खाए।
लेकिन इस नश्वर तन की, नहिं भूख मिटा पाए।।
क्षुधरोग निवारण हेतु प्रभो! नैवेद्य थाल भर लाए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
अज्ञान नगर में मेरा, चिरकाल से है रमना।
नृप मोह के बन्धन में, नहिं पूर्ण हुआ सपना।।
अज्ञान अंधेर मिटाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
हमने कर्मों में निज को, आनन्दित माना है।
अतएव निजातम सुख को, किञ्चित् नहिं जाना है।।
कर्मों के ज्वालन हेतु प्रभो! हम धूप जलाने आए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
मैं क्षणिक विनश्वर फल के, स्वादों में फँसा रहा।
जिह्वा की लोलुपता में, उत्तमफल को न लहा।।
तुम सम फल की प्राप्ती हेतू, फल थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणोंकी, हम पूजा करने आए हैं।।
मैं अष्टद्रव्य ले करके, तव सन्निध आया हूँ।
अष्टम वसुधा पाने को, मैं भी ललचाया हूँ।।
''चन्दनामती'' शिव प्राप्ति हेतु, कुछ भक्त तेरे दर आए हैं।
भगवान्...भगवान् तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आए हैं।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-करती हूँ तुम्हारी भक्ति.....

जब तक गंगा यमुना में, जलधार बहेगी।
तब तक पारस प्रभु की भक्ती, रसधार बहेगी।।
हे पार्श्वप्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी।
कंचन झारी से चरणों में, त्रयधारा करनी है।
सांसारिक जन्म जरा मृत्यू की, बाधा हरनी है।।
जब तक तन मन के कष्टों की, नहिं हानि रहेगी।
तब तक पारस प्रभु की भक्ती, रसधार बहेगी।
हे पार्श्वप्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी।।1।।

शांतये शांतिधारा।

जब तक स्वर्गों में कल्पवृक्ष का, वास रहेगा।
पारसप्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।
चम्पा चमेली पुष्पों से पुष्पांजलि करना है।
आत्मीक गुणों से अन्तर्मन को, पुष्पित करना है।।
उनका अर्चन तन मन की बाधा, ह्रास करेगा।
पारस प्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

तर्ज-आए महावीर भगवान.....

कर लो पारसप्रभु का ध्यान, तुम पारस बन जाओगे।
तुम पारस बन जाओगे, मुक्तिश्री पा जाओगे।।कर लो.....।।
वैशाख कृष्ण दुतिया को, माता के गर्भ पधारे।
माता वामा ने सोलह, सुपने देखे थे प्यारे।।
करलो भक्ति गर्भकल्याण, तुम पारस बन जाओगे।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण ग्यारस को, तीर्थंकर बालक जन्मे।
शचि गई प्रभू को लेने, माता के प्रसूति गृह में।।
पूजा करो जन्मकल्याण, तुम पारस बन जाओगे।।2।। कर लो.....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषी कृष्णा एकम को, दीक्षा धारी जा वन में।
लौकांतिक सुरगण आए, प्रभु की संस्तुति भी करने।।
जज लो दीक्षा शुभकल्याण, तुम पारस बन जाओगे।।3।।कर लो....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र चतुर्थी के दिन, प्रभु केवलज्ञान हुआ था।
सबने प्रभु समवसरण में, दिव्यध्वनि पान किया था।।
भज लो प्रभु का केवलज्ञान, तुम पारस बन जाओगे।।4।।कर लो...।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थी केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमि को, प्रभु को निर्वाण हुआ था।
सम्मेदशिखर पर्वत पर, इन्द्रों ने हवन किया था।।
पूजन करो मोक्षकल्याण, तुम पारस बन जाओगे।।5।।कर लो.....।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....

जय जय पारस प्रभो, भवदधितारक विभो, द्वार आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।टेक.।।
गर्भ से मास छह पूर्व नगरी, रत्नमय वह बनारसपुरी थी।

इन्द्रगण आ गए, चक्रधर पा गए, तेरी छाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।1।।

जन्म होते ही कम्पित मुकुट थे, दिव्य बाजे स्वयं बज उठे थे।
जग चकित हो गया, मोह तम खो गया, प्रभु को पाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।2।।

वामानन्दन हो पारस प्रभो तुम, अश्वसेन के प्रिय लाल हो तुम।
धर्मामृत जो बहा, ज्ञानामृत को लहा, जो भी आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।3।।

केतु ग्रह की सभी बाधा हरते, उच्च पद यशसहित सबको करते।
विघ्नविजयी हो तुम, मृत्युविजयी हो तुम, सिद्धि पाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।4।।

तेरी भक्ती का फल मैं यह चाहूँ, कंठ अपना अकुंठित बनाऊँ।
''चन्दनामति'' प्रभो, मांगते सब विभो, तेरी छाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

पार्श्वनाथ की भक्ति का, जो करते रसपान।
अपनी आतमशक्ति की, वे करते पहचान।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सम्मेदशिखर टोंक वन्दना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वन्दना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।

जब प्रत्यक्ष करें यात्रा, उस पुण्य का वर्णन क्या करना।
लेकिन प्रतिदिन भी परोक्ष में, गिरि का ध्यान किया करना।।
आँख बन्द कर करो कल्पना, मेरी यात्रा शुरू हुई।
प्रातःकाल चले सब यात्री, जय जयकारा शुरू हुई।।2।।

एक हाथ में छड़ी दूसरे, में चावल की झोली है।
ज्यादातर सब पैदल हैं, पर किसी-किसी की डोली है।।
कभी न चलने वाले भी, हिम्मत कर पर्वत चढ़ते हैं।
पारस प्रभु के पास पहुँचने, हेतु कदम बढ़ चलते हैं।।3।।

चढ़ते-चढ़ते आठ किलोमीटर, का पथ जब तय होता।
दायें हाथ तरफ तब इक, चौपड़ा कुंड दर्शन होता।।
वहाँ दिगम्बर जिनमंदिर, संस्कृति की अमिट धरोहर है।
पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु बाहुबलि की मूर्ति मनोहर हैं।।4।।

उस मन्दिर में रुककर अपने, प्रभु का दर्शन कर लेना।
सुन्दर बनी धर्मशाला में, इच्छा हो तो ठहर लेना।।
मंदिर दर्शन करके फिर, यात्रा प्रारंभ करो अपनी।
बायें हाथ चलो चढ़ कर जहाँ, गौतम स्वामी टोंक बनी।।5।।

यहाँ पहुँचकर ठंडी-ठंडी, हवा थकान मिटाती है।
गणधर चरण वन्दना से, यात्रा की शक्ती आती है।।
प्रथम टोंक यह हुई पास में, दुतिय टोंक कुंथु जिन की।
तीर्थंकर क्रम में यह पहली, टोंक नमूँ कुंथु प्रभु की।।6।।

इन टोंकों के दर्शन से, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
त्रय प्रदक्षिणा देने से, आगे शुभ गति का बंध हुआ।।

शुभ भावों से आगे बढ़कर, टोंक तीसरी आती है।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर की, वन्दना सहज हो जाती है।।7।।

चौथा नाटक कूट तीर्थंकर, अरहनाथ का आया है।
जहाँ करोड़ों मुनियों ने भी, तपकर शिवपद पाया है।।
वन्दन कर आगे बढ़ने से, मल्लिनाथ के चरण मिले।
आगे छठे टोंक पर श्री, श्रेयाँसनाथ पदकमल मिले।।8।।

इन सबका वन्दन कर मैंने, सिद्धशिला को नमन किया।
वहाँ विराजे सिद्धों को, अपने मन में स्मरण किया।।
थकना नहिं अब पुष्पदंत की, सप्तम टोंक पे चलना है।
आगे चढ़ने हेतु वहीं से, आतमशक्ती भरना है।।9।।

पुष्पदंत प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर नमन किया।
और चले आठवीं टोंक पर, पदमप्रभू का शरण लिया।।
नवमीं टोंक विराजे श्री, मुनिसुव्रत जिन के चरणकमल।
इन सबके पावन पद में, श्रद्धा से मैंने किया नमन।।10।।

हे भव्यात्मन् ! अब दसवीं चन्द्रप्रभ टोंक पे चलना है।
पहले दौड़-दौड़ कर उतरो, फिर ऊँचाई चढ़ना है।।
चन्द्रप्रभ मंदिर में जाकर, चरणवन्दना करना है।
अपने सारे सुख-दुख को, प्रभु चरण बैठकर कहना है।।11।।

अब ग्यारहवीं टोंक पे चलकर, ऋषभदेव को नमन करो।
गिरि कैलाश से मुक्त हुए, यहाँ उनके चरण चिन्ह प्रणमो।।
श्री शीतल जिनवर की है, बारहवीं टोंक प्रसिद्ध कही।
मन-वच-तन से वन्दन कर, पाओ यात्रा का पुण्य सही।।12।।

श्री अनंत तीर्थंकर का, तेरहवाँ कूट स्वयंभू है।
उनके चरणों में श्रद्धायुत, शीश झुकाकर वन्दूँ मैं।।
संभव जिनवर का चौदहवाँ, धवलकूट माना जाता।
वासुपूज्य जिनका पन्द्रहवां, टोंक सभी को सुखदाता।।13।।

इनको वन्दन कर आगे, अभिनन्दन प्रभु के पास चलो।
बन्दर चिन्ह सहित उन प्रभु की, टोंक पे बन्दर से न डरो।।

अभिनन्दन के चरणों में, कर नमन चलो जलमंदिर तक।
चढ़ो वहाँ से जहाँ है गौतम, गणधर प्रभु की टोंक प्रथम।।14।।

फिर सत्रहवीं टोंक से अपनी, अगली यात्रा करना है।
धर्मनाथ प्रभु के चरणों में, नमन सभी को करना है।।
सुमतिनाथ का अट्ठारहवाँ, टोंक है अविचल कूट कहा।
नौ करोड़ बत्तीसलाख, उपवास का फल मिलता है यहाँ।।15।।

उन्निसवाँ है टोंक शांतिजिन, का जो यहाँ से मोक्ष गये।
नौ करोड़ से अधिक मुनी, इस कुंदकूट से मोक्ष गये।।
शांतिनाथ के संग सब मुनियों, को श्रद्धा से नमन किया।
पुनः बीसवीं टोंक पे जाकर, वीरप्रभू की शरण लिया।।16।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर इक्कीसवीं टोंक पर राजे हैं।
कहते हैं यहाँ की मिट्टी से, रोग सभी नश जाते हैं।।
इनका वंदन करके पास में, विमल नाथ की टोंक चलो।
बाइसवीं इस टोंक को नमकर, अजितनाथ के निकट चलो।।17।।

थके कदम से तेइसवीं इस, टोंक का वंदन कठिन तो है।
लेकिन यात्रा पूरी करने, का शुभ भाव हृदय में है।।
धीरे-धीरे चढ़कर आखिर, अजितनाथ तक पहुँच गये।
उन चरणों में नमन किया फिर, नेमिनाथ जी प्राप्त हुए।।18।।

इस चौबिसवीं टोंक पे नेमीनाथ चरण को नमन किया।
पारसनाथ प्रभू पाने हेतू फिर मैंने गमन किया।।
स्वर्णभद्र यह टोंक है अंतिम, यात्रा पूर्ण यहाँ होती।
पार्श्वनाथ की पूजन करके, मन सन्तुष्टि यहाँ होती।।19।।

कुछ क्षण ध्यान करो फिर नीचे, गुफा में स्थित चरण नमो।
खुशी-खुशी वन्दना पूर्ण कर, पर्वत से नीचे उतरो।।
यही वन्दना आत्मा की, भव्यत्व शक्ति बतलाती है।
तभी "चन्दनामती" सभी में, भक्ति स्वयं आ जाती है।।20।।

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।21।।

सम्मेदशिखर चालीसा

-दोहा-

सिद्धिप्रिया की प्राप्ति हित, नमन करूँ सब सिद्ध।
क्रम से भव को काटकर, होऊँ पूर्ण समृद्ध।।1।।
सिद्धक्षेत्र शाश्वत कहा, गिरि सम्मेद महान।
जहाँ अनन्तानंत प्रभु, ने पाया शिवधाम।।2।।
सम्मेदाचल तीर्थ का, चालीसा सुखकार।
पढ़ें सुनें जो भव्यजन, क्रम से हों भव पार।।3।।

-चौपाई-

जय हो श्री सम्मेद शिखर की, जय हो उस शाश्वत गिरिवर की।।1।।
हों जयवन्त बीस ये जिनवर, सिद्ध बने थे जो तीर्थंकर।।2।।
इस हुण्डावसर्पिणी युग में, चार जिनेश्वर अन्य स्थल से।।3।।
मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध बन गए, वे तीरथ भी पूज्य बन गए।।4।।
लेकिन भूत भावि कालों में, यहीं से मुक्त हुए अरु होंगे।।5।।
यही अटल सिद्धान्त नियम है, सिद्धिवधू का यह उपवन है।।6।।
कोड़ाकोड़ि मुनीश्वर आते, इस पर्वत पर ध्यान लगाते।।7।।
टोंक-टोंक से मोक्ष पधारे, घाति अघाती कर्म विडारे।।8।।
इसीलिए गिरि की रजपावन, है वहाँ का कण-कण मनभावन।।9।।
यात्रा यद्यपि बहुत कठिन है, यात्री होता फिर भी धन्य है।।10।।
थक थककर भी चढ़ जाता है, अपनी मंजिल पा जाता है।।11।।
पार्श्वनाथ की टोंक पे जाकर, प्रभु के सम्मुख शीश झुकाकर।।12।।
जन्म सफल कर लेता मानव, दूर हटें दुर्गति के दानव।।13।।
मन्दिर कई बने पर्वत पर, जिनमें इक प्रसिद्ध जलमन्दिर।।14।।
थका पथिक कुछ देर बैठकर, करता है विश्राम वहाँ पर।।15।।

फिर यात्रा पर चल देता है, यात्रा का फल वर लेता है।।16।।
पर्वत का प्राकृतिक दृश्य भी, बड़ा मनोरम सुखद सत्य ही।।17।।
सीता नाला है इक झरना, जहाँ एक क्षण सबको रुकना।।18।।
शीतल जल से पग धो लेना, यदि शक्ती वापस हो लेना।।19।।
एक ओर गन्धर्व है नाला, बहता झर-झर झरना प्यारा।।20।।
उतर-उतर कर यात्री आते, स्वल्पाहार प्रसाद को पाते।।21।।
बच्चे-बूढ़े सब लेते हैं, दान स्वरूप द्रव्य देते हैं।।22।।
एक वन्दना करके भी वे, तीन, पाँच, नौ भी कर लेवें।।23।।
शतक सहस्र वन्दना वाले, कुछ मुनि श्रावक भक्त बखाने।।24।।
उनकी काया सुदृढ़ बनी है, भावों की माया सुघनी है।।25।।
इस पर्वत की महिमा न्यारी, कही पूर्व ऋषियों ने भारी।।26।।
एक बार वन्दे जो कोई, तांहि नरक पशुगति नहिं होई।।27।।
भव्यजीव ही जा सकते हैं, पर्वत वन्दन कर सकते हैं।।28।।
नहिं अभव्य पर्वत चढ़ सकते, शास्त्र जिनागम ऐसा कहते।।29।।
मोक्षगमन की शक्ति जहाँ है, भव्य शक्ति का वास वहाँ है।।30।।
चाहे वह कितने ही भव में, कर्मनाश कर पहुंचे शिव में।।31।।
किन्तु अभव्य न शिवपद पाते, निज अभव्य शक्ति के नाते।।32।।
ये परिणामिक भाव जीव के, होते हैं स्वयमेव जीव में।।33।।
वर्तमान में भी वह तीरथ, जिनमत की कहता है कीरत।।34।।
पर्वत के नीचे भी मंदिर, बने अनेकों अद्भुत सुन्दर।।35।।
कई धर्मशालाएं भी हैं, यात्री को सुविधाएं भी हैं।।36।।
श्रावण सुदि सप्तमि का मेला, होता है वहां खूब रंगीला।।37।।
होली पर भी मधुबन जाना, होली का देखो नजराना।।38।।
सांवरिया का नाम पुकारो, पारस का जयकार उचारो।।39।।
तुम भी पारस बन जाओगे, भक्ती का रस पा जाओगे।।40।।

-शंभु छंद-

चालिस दिन तक जो करे, नित चालीसहिं बार।
मिले सहस उपवास फल, सुख सम्पत्ति अपार।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमति, बालसती विख्यात।
उनकी शिष्या चन्दनामती रचित यह पाठ।।2।।

सुगन्ध दशमी भाद्रपद, की तिथि है सुप्रसिद्ध।
वीर संवत् पच्चीस सौ, तेइस की कृति सिद्ध।।3।।

जब तक गिरि सम्मेद का, जग में रहे प्रकाश।
चालीसा यह तीर्थ का, तन मन करे विकास।।4।।

सिद्धों की उस श्रेणी में, आए मेरा नाम।
सिद्धक्षेत्र की भक्ति से, मिले मुझे शिवधाम।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।। टेक.।।

कहते हैं इस गिरि की वन्दना से,
तिर्यंच नरकायु मिलती नहीं है।
श्रद्धा सहित इसकी अर्चना से,
भव्यत्व कलिका खिलती रही है।।

रात अंधेरी हो, भक्ति सहेली हो, लगता न डर पर्वत पर कभी।
अतिशय से गूँजे यहाँ, सांवरिया का नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।1।।

इस युग के चौबिस तीर्थंकरों में,
मोक्ष गए बीस जिनवर यहाँ से।
कितने करोड़ों मुनियों ने भी,
तप करके शिवालय पाया यहाँ से।।

तीर्थ पुराना है, श्रेष्ठ खजाना है, सबको तिराता है संसार से।
तीरथ की कीरत अमर, कर सकता इंसान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।2।।

जिनधर्म निधि को पाकर के उसका,
सच्चा सदुपयोग करना है हमको।
आपस में मैत्री, दीनों पे करुणा,
का भाव जग में सिखाना है सबको।।

स्वार्थ त्याग करके, शीघ्र जाग करके, जैनत्व की सब रक्षा करो।
तीरथ की रज ''चन्दना'' मस्तक का परिधान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–ऐ मेरे वतन के लोगों.....

भारत के जैनी वीरों, तुम सुन लो कथा पुरानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।। टेक.।।

इक नहीं अनन्तों जिनवर, साकेतपुरी में जन्मे।
सम्मेदशिखर से शिवपद, पा सिद्धशिला पर पहुँचे।।
उस रज को सिर पर धर लो, जो कहती अमर कहानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।1।।

बन करके दिगम्बर मुनिवर, इस गिरि पर ध्यान किया है।
कितनों ने तपस्या करके, कर्मों का नाश किया है।।
उन सब सिद्धों को नम लो, जो बने आत्म श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।2।।

यह सिद्धक्षेत्र जिनवर का, जैनी इसके अधिकारी।
इसका दर्शन वन्दन है, हर मानव को हितकारी।।
पर्वत को वन्दन कर लो, सब जिनमत के श्रद्धानी।।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।3।।

यह तीर्थ अहिंसा का शुभ, सन्देश सुनाता जग को।
भावों को शुद्ध बनाकर, तिरना सिखलाता सबको।
''चन्दना'' तभी हम सबमें, सार्थक होगी प्रभुवाणी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।4।।

ये धर्मतीर्थ न कभी भी, बेचे व खरीदे जाते।
हर मानव की श्रद्धा के, ये केन्द्रबिन्दु कहलाते।।
निजमत जिनमत में बदलो, बनकर सच्चे श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–पंखिड़ा.....

वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की।
अश्वसेन और माता वामा लाल की।।
वंदना.....वंदना.....वंदना.....वंदना.....।। टेक.।।

देखो वाराणसी से प्रभू के भक्त आये हैं।
प्रभु के जन्म की खुशी में सुन्दर रत्न लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।1।।

देखो अहिच्छत्र से प्रभू के भक्त आए हैं।
केवलज्ञान की खुशी में सुन्दर गीत गाये हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।2।।

देखो सम्मेदगिरि से प्रभु के भक्त आए हैं।
प्रभू के मोक्ष की खुशी में सभी लाडू लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।3।।

सारे देश के पुजारी भक्त दर पे आते हैं।
'चन्दनामती' ये भक्ति करके पुण्य पाते हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।। टेक.।।
ऋषभ-अजित-अभिनंदन-सुमती, अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे, जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो...।।1।।
श्रावस्ती में संभव, कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व-पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो...।।2।।
पुष्पदन्त काकन्दी, शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो...।।3।।
कम्पिलजी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति-कुंथु-अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो,
मल्लिनाथ-नमिनाथ जन्मभूमी वंदन कर लो।। चलो...।।4।।
राजगृही में मुनिसुव्रत, नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें, महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर, जन्म सफल कर लो।। चलो...।।5।।
गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से हि ''चन्दना'' आत्मशुद्धि कर लो।। चलो...।।6।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।
तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।1।।
वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।2।।
कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।3।।
गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सबको।
सभी ''चन्दनामती'' हमेशा, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –श्री सिद्धचक्र का पाठ.....

गंधोदक का माहात्म्य, सुनो मन शांत भाव से प्राणी,
फल पायो मैना रानी।।टेक.।।
इक मैना का इतिहास सुना।
जिनधर्म कर्मसिद्धान्त सुना।।
श्री सिद्धचक्र का पाठ है उसकी निशानी, फल पायो मैना रानी।।1।।
दूजी इक मैना और हुई।
जो जिन भक्ती में प्रसिद्ध हुई।।
इस कन्या ने सम्यक्त्व की महिमा जानी, फल पायो मैना रानी।।2।।
है ग्राम टिकैतनगर सुन्दर।
मैना का जन्म हुआ जहाँ पर।।
मोहिनी व छोटेलाल की प्रथम निशानी, फल पायो मैना रानी।।3।।
इक बार महामारी फैली।
घर-घर में थी चेचक निकली।।
मैना के दो भ्राता की बनी कहानी, फल पायो मैना रानी।।4।।
फैली कुरीति थी नगरी में।
शीतला मात पूजन कर लें।।
ऐसी श्रद्धा करते थे सब अज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।5।।
मैना जिनमत श्रद्धानी थी।
कर्मों की गति पहचानी थी।।
प्रभु शीतलनाथ की भक्ती उसने ठानी, फल पायो मैना रानी।।6।।
गंधोदक रोज लगा करके।
कर दिया स्वस्थ भ्राता अपने।।
पर कितनों की हो गई मृत्यु नहिं मानी, फल पायो मैना रानी।।7।।
यह चमत्कार देखा सबने।
तब जिनवर के दृढ़ भक्त बने।।
मिथ्यात्व दूर हो गया बने सब ज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।8।।
यह मैना ही बनी ज्ञानमती।
जो बालयोगिनी प्रथम कही।।
इस युग की गणिनीप्रमुख आर्यिका मानी, फल पायो मैना रानी।।9।।
तुम भी दृढ़ श्रद्धानी बनना।
गंधोदक पर श्रद्धा रखना।।
'चन्दनामती' यह सच्ची कही कहानी, फल पायो मैना रानी।।10।।

भगवान श्री पार्श्वनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय पारस स्वामी, प्रभु जय पारस स्वामी।
वाराणसि में जन्में, त्रिभुवन में नामी।।ॐ जय.।।

अश्वसेन के नंदन, वामा के प्यारे।।माता वामा.....
तेइसवें तीर्थंकर-2, तुम जग से न्यारे।।ॐ जय.।।1।।

वदि वैशाख दुतीया, गर्भकल्याण हुआ।स्वामी.....
पौष कृष्ण एकादशि-2, जन्मकल्याण हुआ।।ॐ जय.।।2।।

जन्मदिवस ही दीक्षा, धारण की तुमने।स्वामी.....
बालब्रह्मचारी बन-2, तप कीना वन में।।ॐ जय.।।3।।

कमठासुर ने तुम पर, घोर उपसर्ग किया।स्वामी.....
अहिच्छत्र में तुमने-2, पद कैवल्य लिया।।ॐ जय.।।4।।

श्री सम्मेदशिखर पर, मोक्षधाम पाया।स्वामी.....
मोक्षकल्याण मनाकर-2, हर मन हरषाया।।ॐ जय.।।5।।

परमसहिष्णू प्रभु की, आरति को आए।स्वामी.....
यही ''चंदनामती'' अरज है-2, तव गुण मिल जाएं।।ॐ जय.।।6।।

भगवान श्री पार्श्वनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–करती हूं तुम्हारी पूजा.....

करते हैं प्रभू की आरति, मन का दीप जलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।टेक.।।

हे अश्वसेन के नन्दन, वामा माता के प्यारे।
तेईसवें तीर्थंकर पारस प्रभु, तुम जग से न्यारे।।
तेरी भक्ती गंगा में जो स्नान करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।1।।

वाराणसि में जन्में, निर्वाण शिखरजी से पाया।
इक लोहा भी प्रभु चरणों में, सोना बनने आया।।
सोना ही क्या वह लोहा, पारसनाथ बनेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।2।।

सुनते हैं जग में वैर सदा, दो तरफा चलता है।
पर पार्श्वनाथ का जीवन, इसे चुनौती करता है।।
इक तरफा वैरी ही कब तक, उपसर्ग करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।3।।

कमठासुर ने बहुतेक भवों में, आ उपसर्ग किया।
पारसप्रभु ने सब सहकर, केवलपद को प्राप्त किया।।
कैवल्य ज्योति से पापों का, अंधेर मिटेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।4।।

प्रभु तेरी आरति से मैं भी, यह शक्ती पा जाऊं।
''चंदनामती'' तव गुणमणि की, माला यदि पा जाऊं।
तब जग में नहिं शत्रू का, मुझ पर वार चलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।5।।

शाश्वत निर्वाणभूमि

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–मैं तो .....

मैं तो आरती उतारूँ रे, सम्मेदगिरिवर की,
जय जय सम्मेदशिखर, जय जय जय-2।।टेक.।।

कहा शाश्वत है यह गिरिराज, अनादी कालों से-अनादी कालों से।
मुक्ति वरते यहीं से जिनराज, अनादी कालों से-अनादी कालों से।।
पावन है, पूज्य है, गिरिवर की धूल है, सिर पे चढ़ाओ जी,
हो धूली सिर पे चढ़ाओ जी।।मैं तो.....।।1।।

इस युग के जिनेश्वर बीस, मुक्त हुए यहीं से–मुक्त हुए यहीं से।
बने सिद्धशिला के ईश, नमन करूँ रूचि से-नमन करूँ रूचि से।।
आरती का थाल ले, भक्ति सुमन भाल ले, सबको बुलाऊँ मैं,
हो भक्तों की टोली बुलाऊँ मैं।।मैं तो.....।।2।।

इक बार भी जो वन्दना, करे इस गिरिवर की–करे इस गिरिवर की।
उनको मिलती न उस भव से, नरक अरु पशुगति भी-नरक अरु पशुगति भी।।
मैं भी इसी भाव से, शुभ गती की चाव से, भक्ती रचाऊँ रे,
हो गिरि पर चढ़ करके जाऊँ रे।।मैं तो.....।।3।।

सांवरिया का है चमत्कार, सम्मेदाचल में–सम्मेदाचल में।
पारस पारस की ही है पुकार, आज भी मधुबन में-आज भी मधुबन में।।
''चंदनामति'' भक्ति में, आज भी शक्ति है, उसमें ही रम जाओ रे,
हो गिरि की आरति का फल पाओ रे।।मैं तो.....।।4।।